विचार बिन्दु

प्रकृति ईश्वर का प्रकट रूप है, कला मानुष्य का। –लांगफैलो

आयुर्वेद की वसंत ऋतुचर्या

एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि आयुर्वेद में ऋतुचर्या किन सिद्धांतों को ध्यान में रखकर तय की गयी होगी? लगभग 5000 साल पहले तय की गयी ऋतुचर्या क्या आज भी उपयोगी है? पहली बात यह है आयुर्वेद का लोक-पुरुष-साम्य सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि पुरुषलोक के समान है (च.शा.5.3:पुरुषोऽयं लोकसम्मितः) इस सिद्धांत के प्रकाश में देखने पर लोक या पृथ्वी के वातावरण का सीधा-सीधा प्रभाव मानव के स्वास्थ्य पर पड़ता है क्योंकि लोक और पुरुष में समानता (च.शा.5.3:लोकपुरुषयोः सामान्यम्) होने से सामान्य-विशेष का सिद्धांत कार्य करता है। अर्थात सामान भावों को सामान भावों से मिलाने पर उस भाव की वृद्धि और असमान भावों को मिलाने पर ह्रास होता है। सत्य बुद्धि तभी प्रकट होती है जब स्वयं के अंदर प्रकृति को व प्रकृति के अंदर स्वयं को देखा जाये (च.शा.5.7): सर्वलोकमात्मन्यात्मानं च सर्वलोके सममनुपश्यतः सत्या बुद्धिः समुत्पद्यते। यहाँ पर लोक से तात्पर्य पूरी दुनिया के वातावरण से है जिसमें छः धातुयें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश तथा आत्मा शामिल हैं (च.शा.5.7): षड्धातुसमुदायो हि सामान्यतः सर्वलोकः। इस सूची में आत्मा का शामिल होना आश्चर्यजनक नहीं मानना चाहिये क्योंकि पौधे, प्राणी और सम्पूर्ण जीवन भी लोक में शामिल है। जिस प्रकार चंद्रमा, सूर्य, और वायु क्रम से विसर्ग, आदान, विक्षेप क्रियाओं से जगत का धारण करते हैं, ठीक उसी प्रकार सोमांश कफ, सूर्य जैसा पित्त, तथा वायु देह का धारण करते हैं (सु.सू.21.8): विसर्गादानविक्षेपैः सोमसूर्यानिला यथा। धारयन्ति जगद्देहं कफपित्तानिलास्तथा।।

इन आयुर्वेदिक सिद्धांतों को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो पर्यावरण और पारिस्थिक तंत्र के साथ मानव के रिश्तों की अनवरत सार-संभाल या अनुकूलन ही ऋतुचर्या है। इसे साधारण शब्दों में यों समझें कि यदि हवा, पानी, तापक्रम, मिट्टी, पेड़-पौधों में ऋतु के अनुसार परिवर्तन होते हैं तो हमें भी उसके अनुसार जीवन-शैली और खान-पान और पहनावे में परिवर्तन करना पड़ता है। यह परिवर्तन या अनुकूलन ही धातुसाम्य रखता है। यही अनागत रोगों का प्रतिकार या विकार-अनुत्पत्ति में सहायक है।

आयुर्वेद में वसंत ऋतुचर्या का बड़ा रोचक वर्णन है जो आधुनिक आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि से बहुत साम्यता रखता है। वनों और उपवनों में जहां ठण्डी हवा, जल से भरे हुये तालाब, विविध प्रकार की जैव-विविधता वाले पुष्प-वृक्षों की प्रजातियाँ एवं विविध प्रजातियों के पक्षियों की कलरव ध्वनि हो, वहां समय बिताने के लिये वसन्त ऋतु सर्वोत्तम है। आधुनिक वैज्ञानिक शोध में उपवन, ग्रीन स्पेस, पार्क्स या गार्डन्स के स्वास्थोपयोगी प्रभाव पर पूरी दुनिया में बहुत शोध हुये हैं। प्राकृतिक-तन्त्रों, वनों एवं जैव विविधता क्षेत्रों में स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव पर सबसे प्राचीन निष्कर्ष चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता और अष्टांगहृदय में उपलब्ध हैं।

आइये चरकसंहिता में वसंत की आरोग्यदायी ऋतुचर्या का वर्णन देखते हैं: सन्दर्भ (च.सू.6.22-26): वसन्ते निचितः श्लेष्मा दिनकृद्भाभिरीरितः। कायाग्निं बाधते रोगांस्ततः प्रकुरुते बहून्।। तस्माद्वसन्ते कर्माणि वमनादीनि कारयेत्। गुर्वम्लस्निग्धमधुरं दिवास्वप्नं च वर्जयेत्।। व्यायामोद्वर्तनं धूमं कवलग्रहमञ्जनम्। सुखाम्बुना शौचविधिं शीलयेत् कुसुमागमे।। चन्दनागुरुदिग्धाङ्गो यवगोधूमभोजनः। शारभं शाशमैणेयं मांसं लावकपिञ्जलम्।। भक्षयेन्निर्गदं सीधुं पिबेन्माध्वीकमेव वा। वसन्तेऽनुभवेत् स्त्रीणां काननानां च यौवनम्।। तात्पर्य यह है किहेमन्त तथा शिशिर ऋतु में शरीर में संचित कफ, वसन्त ऋतु में सूर्य की गर्मी से कुपित होकर, जाठराग्नि को बाधित करता है। जिसके कारण कफज व्याधियां उत्पन्न हो सकती हैं। अतः कफ को निकालने के लिये वसन्त ऋतु में शिरोविरेचन, वमन, कवल-धारण आदि का प्रयोग करना स्वास्थ्य के लिये लाभकारी रहता है। इसके साथ ही उबटन, गुनगुने पानी का प्रयोग, उद्यानों एवं वनों में घूमना, पैदल चलना तथा शारीरिक व्यायाम भी बसंती-ऋतुचर्या के उपयोगी आयाम हैं। पुष्पित पल्लवित वनों में इनका अनुभव लेना चाहिये।

वसन्त ऋतु में बहुत मीठा, स्निग्ध, अम्ल, देर से पचने वाले गुरू आहार तथा दिन में सोना ठीक नहीं रहता। इसका मूल कारण यह है कि हेमन्त और शिशिर ऋतु में संचित कफ अपने आप में एक समस्या है, और यदि कफ वृद्धि करने वाले ये सभी कार्य किये जायें तो आगे चलकर बीमार होने की आशंका रहती है।

वसन्त ऋतु में खाद्य पदार्थ के रूप में सबसे उत्तम जौ, गेहूं, शहद, ईख, अंगूर आदि उत्तम हैं। आवश्यकतानुसार वैद्यों की सलाह से अंगूर या महुवा से बने हुये स्वच्छ औषधीय-आसव व अरिष्ट वसन्त ऋतु में लिये जा सकते हैं। साठी के चावल, शीत द्रव्य, मूंग, निवारी के चावल, कोदो तथा मूंग की दाल के सूप, बैंगन, पटोल आदि तिक्त रस वाले द्रव्यों का उपयोग उत्तम रहता है। वसन्त ऋतु में तीक्ष्ण, रुक्ष, कटु, क्षार, कषाय रस वाले पदार्थो में जौ, मूंग और मधु मिलाकर भोजन के रूप में लेना उपयोगी है।

वसंत ऋतु में बासंतिक वमन या वैद्य की सलाह से अगर आवश्यक हो तो पंचकर्म भी लिया जा सकता है। तमाम रोगों के विरुद्ध पंचकर्म और इसकी घटक क्रियाओं की विशाल प्रयोज्यता और उपयोगिता है। जब रोगों के उपचार या स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की बात आती है, तो आयुर्वेदिक पंचकर्म के टक्कर की और कोई विधि नहीं है।

वसंत ऋतु में मौसमीं और वायरल बीमारियों का भी प्रकोप अब प्रायः दिखाई पड़ता है। इनसे बचने के लिये वैद्यों की सलाह से हल्दी, तुलसी, आमलकी, शुंठी, कालीमिर्च, पिप्पली, लहसुन, पुदीना, त्रिकटु, त्रिफला, गुडूची, कालमेघ, चिरायता, वासा, शिठू या सहजन, यष्टिमधु, बिभीतकी, अश्वगंधा, हरीतकी, मुस्ता, पाठा, पुनर्नवा आदि युक्तिपूर्वक लिये जा सकते हैं। परन्तु ध्यान यह रखना है कि कोई भी औषधि वैद्य की सलाह के बिना नहीं लें।

सभ्यताओं के विनाश काल में भी, अगर आदमी मौत के मुंह में जाने का काम ही न कर रहा हो, तो पंचकर्म सबसे दुरुस्त चिकित्सा है (च.वि.3.13): येषां न मृत्युसामान्यं सामान्यं न च कर्मणाम्। कर्म पञ्चिवधं तेषां भेषजं परमुच्यते।। वसंत ऋतु में आप पंचकर्म या ऋतुचर्या के अनुसार कम से कम पंचकर्म का एक घटक-वमन-के प्रयोग के बारे में सोच सकते हैं। पर आपको अपने आयुर्वेदाचार्य से सलाह लेकर यह तय करना होगा कि क्या आपको सचमुच पंचकर्म की आवश्यकता है या नहीं। पंचकर्म से स्वास्थ्य को यथावत बनाये रखने और उम्र-आधारित रोग-जनन को दूर रखने में मदद मिलेगी।

पंचकर्म वैसे तो शारीरिक-मानसिक शोधन और रोग शमन दोनों में मददगार है, पर पहली बात यह है कि यदि आप बार-बार बीमार होकर दवाओं में अपना धन नष्ट नहीं करना चाहते, तो पंचकर्म उपयोगी है। बीमारी में धन की बर्बादी के साथ जो शारीरिक-मानसिक पचड़ा-परेशानी होती है वह तो अतिरिक्त है। अतः सदैव स्वस्थ बने रहने के लिये साल में एक बार पंचकर्म करना सबसे उपयुक्त है।

दूसरी बात यह है कि सघन चिकित्सा इकाई में कोई नहीं मरना चाहता। दीर्घ-काल तक, या कहिये जीवन के अंतिम दिन तक, स्वस्थ रहना है तो आयुर्वेद के रसायन बड़ी मदद करते हैं। पर बिना शोधन क्रिया कराये रसायनों को लेने का मतलब वैसा ही है जैसा पुराने कम्बल को रंगना। रसायन उम्र-आधारित रोग-जनन रोकने या दर्द-निवारण में तभी सक्षम होते हैं जब पहले शोधन कराया जाये। नियमानुसार पंचकर्म, रसायन और वाजीकर का प्रयोग करने से धातुसाम्य बना रहता है, रोग नहीं होते, धातुयें बढ़ती हैं इसलिये बूढ़े होने की गति धीमी हो जाती है (च.सू.7.48-49): यथाक्रमं यथायोग्यमत ऊर्ध्वं प्रयोजयेत्। रसायनानि सिद्धानि वृष्ययोगांश्च कालवित्।। रोगास्तथा न जायन्ते प्रकृतिस्थेषु धातुषु। धातवश्चाभिवर्धन्ते जरा मान्द्यमुपैति च।।

तीसरी बात यह है कि वैसे तो पंचकर्म की कुछ क्रियायें दिनचर्या और ऋतुचर्या का अंग हैं, पर हम प्रायः उन्हें भुला देते हैं। जीवन भगदड़ हो गया है। जीवनशैली त्रिदोष-भड़काऊ हो गयी है। प्रज्ञापराध और असात्म्येन्द्रियार्थ संयोग हमारी आदत हो गये हैं। हमारा समय त्रिदोष-भड़काऊ काल है। ऐसी स्थिति में अनेक रोगों की रोगों की शुरुआती अवस्था दिखने लगती है, तब होश आता है कि पंचकर्म तो हमारे लिये ही है।

ऋतुचर्या में पंचकर्म की क्रियायें तो उपयोगी हैं ही, पर साथ ही आयुर्वेद का सिद्धांत यह है कि बहुदोष के लक्षण दिखें तो समझिये पंचकर्म की आवश्यकता निश्चित रूप से है। तात्पर्य यह समझिये कि अपच, आहार-अरुचि, मोटापा, पांडुता, भारीपन, थकावट, पिडका कोठ और कंडू (तरह तरह की फुंसियाँ), स्तम्भ, अरति, आलस, श्रम, कमजोरी, शारीरिक दुर्गन्ध, अवसाद, कफ व पित्त का भड़कना (उत्क्लेश), नींद उड़ जाना या खूब नींद आना, तन्द्रा (उनींदापन या हमेशा औंघाते रहना), क्लैब्य, अबुद्धि की स्थिति, उल्टे-पुल्टे सपने आना, और पौष्टिक आहार लेते रहने के बावजूद बल और रंग उड़ना बहुदोष के लक्षण हैं। ऐसे लोगों के लिये पंचकर्म या संशोधन हितकारी होता है। अनुभवी और कुशल चिकित्सक रोगी के दोष स्थिति व बल को समझकर चिकित्सा की सलाह देगा व शोधन करायेगा (च.सू.16.13-16): अविपाकोऽरुचिः स्थौल्यं पाण्डुता गौरवं क्लमः। पिडकाकोठकण्डूनां सम्भवोऽरतिरेव च।। आलस्यश्रमदौर्बल्यं दौर्गन्ध्यमवसादकः। श्लेष्मपित्तसमुत्क्लेशो निद्रानाशोऽतिनिद्रता।। तन्द्रा क्लैब्यमबुद्धित्वमशस्तस्वप्नदर्शनम्। बलवर्णप्रणाशश्च तृप्यतो बृंहणैरपि।। बहुदोषस्य लिङ्गानि तस्मै संशोधनं हितम्। ऊर्ध्वं चैवानुलोमं च यथादोषं यथाबलम्।।

जैसा कि पहले भी मैंने लिखा है, जीवन और मृत्यु के मध्य सात रक्षा दीवारें हैं: आहार, विहार, सद्वृत्त, स्वस्थवृत्त, पंचकर्म, रसायन/वाजीकर, औषधि। इनमें से शुरू की छः दीवारें स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य-रक्षण में मदद करती हैं। और सभी सात दीवारें या सुरक्षा कवच मिलकर रोगी को स्वस्थ करने में मदद करती हैं। जब आहार, विहार, सद्वृत्त व स्वस्थवृत्त की सुरक्षा दीवार को ठीक से प्रतिदिन न सम्हाला गया हो तो पंचकर्म की जरूरत पड़ जाती है। इसके बाद, जीवन और मृत्यु के बीच रसायन और औषधि की दीवारें ही शेष बचती हैं।

वसंत ऋतु में मौसमीं और वायरल बीमारियों का भी प्रकोप अब प्रायः दिखाई पड़ता है। इनसे बचने के लिये वैद्यों की सलाह से हल्दी, तुलसी, आमलकी, शुंठी, कालीमिर्च, पिप्पली, लहसुन, पुदीना, त्रिकटु, त्रिफला, गुडूची, कालमेघ, चिरायता, वासा, शिठू या सहजन, यष्टिमधु, बिभीतकी, अश्वगंधा, हरीतकी, मुस्ता, पाठा, पुनर्नवा आदि युक्तिपूर्वक लिये जा सकते हैं। परन्तु ध्यान यह रखना है कि कोई भी औषधि वैद्य की सलाह के बिना नहीं लें।

ऋतुचर्या पालन वस्तुतः एक आरोग्यदायी युक्ति है। इस सन्दर्भ में चरकसंहिता का एक संवाद देखिये: "भगवन्! क्या लोगों की आयु निश्चित होती है या नहीं (किन्नु खलु भगवन्! नियतकालप्रमाणमायुः सर्वं न ति।?" अग्निवेश ने पूछा। भगवानआत्रेय का उत्तर यहथा: "अग्निवेश! समस्त प्राणियों की आयु युक्ति की अपेक्षा करती है (इहाग्निवेश! भूतानामायुर्युक्तिमपेक्षते)।" यहाँसन्देश यह है कि मृत्यु की तिथि तय नहीं है। आयु युक्ति की अपेक्षा करती है। युक्ति से आप स्वस्थ रह सकते हैं। युक्ति से आपकी आयु बढ़ाई जा सकती है। युक्तिपूर्वक वसंत ऋतुचर्या का आनंद लीजिये और स्वस्थ रहिये।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

अभद्र भाषा का व्यापार : नोटों की बरसात – सरकार बेखबर

राजेन्द्र मोहन शर्मा

हमारी सामाजिक परम्परा में गालियों का बहुत पुराना इतिहास है। ये एक जरिया भी हैं जिससे मानव मन के भीतर जमा हुआ गुस्सा, हताशा और अवसाद फूटकर बाहर निकलता है। यानि कि गालियां हमारे जीवन की 'सेफ्टी वाल्व' होती हैं, जो प्रेशर कुकर में बनी भाप को बाहर निकाल देती हैं और मानवीय धैर्य के कुकर को विस्फोट होने से बचाती हैं। कहते हैं यदि समाज से गालियां हटा दी जाएं, तो समाज बीमार हो जाएगा। कह सकते हैं कि गालियों से ही समाज में स्वस्थ्य चित्त का निर्माण होता है। फिर, गाली क्या है? कुल जमा कुछ शब्दों का जोड़ ही तो है गाली। बिजली गुल होती है, तो लोग गाली पुराण का पाठ शुरू करते हैं कि इन बिजली वालों ने फिर लाइट गायब की.. इनकी.. उनकी..! नहाते हुए अगर नल का पानी चला जाए, तो फिर गालियों का डोज़ दूनी ही तेज़ी से निकलता है। बात गाली पर हो और शर्त यह कि वह शालीनता की सीमा से बाहर न जाए, यह नट के डोर पर चलने जैसा है। गाली वैचारिक लिहाज़ से अपनी ताक़त दिखाने का ज़रिया भी है। आपका यह उद्देश्य तभी पूरा हो सकता हैं, अगर गाली सुनने वाले को बुरी भी लगे। गालियों से हमें यह भी मालूम पड़ता है कि हमारे समाज में किस चीज को बुरा माना जाता है। झगडे की स्थिति में गाली एक रास्ता देती है। आप बजाए मारा-पीटी करने के, मुँह से कुछ कहकर अपनी नाराज़गी व्यक्त कर सकते हैं। यानि गाली लड़ाई का अहिंसक तरीक़ा भी है। अधिकतर गालियां यौन अंगों और यौन सम्बंधों से जुड़ी हुई हैं। हमारी अधिकतर गालियां स्त्रियों की बात करती हैं। यानि आप का झगड़ा किसी से भी हो, गाली में अक्सर उसकी मां या बहन को ही पुकारा जाता है। यह स्थिति हमारे समाज में महिलाओं के प्रति बीमार मानसिकता का बोध कराती है। अगर नीयत साफ़ हो, तो गालियां जीवंत संस्कृति का प्रतीक भी बनती हैं। जैसे देश में हर दस कोस पर पानी और भाषा बदल जाती है, वैसे ही गालियों का भी व्याकरण बदलता है।

पहले परंपराओं में ये गाली एक समय विशेष के खांचे में बंधी रहती थी, पर यहां तो ये सिलसिला अंतहीन हो गया। अब तो गाली शास्त्रार्थ रुकने का नाम ही नहीं लेता है। गाली पहले इन्सानी प्रवृतियों के लिए अनुमन्य थी। पर अब यह व्यक्तियों को दी जाने लगी है। वह भी सिर्फ़ उन्हें अपमानित करने के लिए।

गालियों को स्त्री विरोधी बना देना एक सामाजिक विसंगति है, जो समाज के अधोपतन के साथ प्रचलित हो गईं। हम ऐसी बहुत सी गालियां बकते हैं जो स्त्री की यौनिकता पर चोट करती हैं। ये पूरी तरह से स्त्री विरोधी गालियां हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि गालियों का भी लिंग होता है।

गालियां समय, स्थान, व्यक्ति पर निर्भर नहीं करतीं। ऐसे-ऐसे गालीबाज देखें हैं जिनके मुंह से गाली पहले और शब्द बाद में निकलते हैं।कई लोगों के लिए यह जरूरी नहीं कि वह किसी व्यक्ति को ही गाली दें, मंदिर की सीढ़ियों पर टकराकर भी उनके मुंह से गाली निकल जाती है। वो आसमान, बरखा, बारिश तक को सूंत सकते हैं, किसी स्थान को गाली दे सकते हैं, किसी समय को गाली दे सकते हैं। ऐसी भद्दी मान्यता भी है कि जो ज्यादा गाली देते हैं वो दिल के साफ होते हैं। जो नहीं दे पाते वो अंदर-अंदर घुन्ने रहते हैं। आजकल तो गालियां भी है, स्कूल वाली, कॉलेज वाली ओटीटी पर गालियों की भरमार ने इसे अलग तरह की स्वीकृति दे दी है। तर्क भी बड़े हैं अगर जीवन में गालियां हैं तो फिल्मों में, वेब सीरीज में क्यों नहीं पोडकास्ट और मंनोरंजन के मंचों पर क्यों न हो। हमारे तो शादि विवाह से लेकर धुलण्डी को सार्वजनिक तौर पर गालियों की बौछार होती है पर लोग उसका बुरा नही मानते वो एक अवसर विशेष होता है।

लेकिन अब वर्जनाओं वाले समाज की छटपटाहट धीरे-धीरे विस्फोटक होती हुई ओटीटी के प्लेटफॉर्म पर गालियों के साथ पूरी नग्नता परोसी कर अब सार्वजनिक मंचों से अभद्रतापूर्ण ही नहीं खुले आम अश्लील शाब्दिक आक्रमण शुरु हो गए हैं। स्टैंडअप कॉमेडियन समय रैना के शो 'इंडियाज गॉट लेटेंट' में जज बनकर आए रणवीर अलाहाबादिया, समय रैना और अपूर्वा ने गलियों की बोछारों के साथ सारी सीमाएं लांघते हुए माता-पिता के सैक्स सम्बन्धों और माता की यौनी जैसे मुद्दों पर भद्दे मजाक किए। जहां लोग टिकट खरीद कर इस फूहड़ता पर ठहाके भी लगा रहे थे। आज लोकप्रियता हासिल करने का सुगम तरीका है सैक्स से भरे मुद्दों को फूहडता से परोसो या किसी के मर्म पर या धर्म पर चोट करो।

जिन्हें नही पता उनकी जानकारी के लिए बता दूं कि रणवीर अलाहबादिया एक पोडकास्टर है। जिसने बड़े बड़े नेताओं से लेकर धर्मगुरुओं तक के साथ पॉडकास्ट किए हैं। इतना ही नही खुद मोदी जी इसे सार्वजनिक मंच से सम्मानित कर चुके है। रणवीर समय रैना और अपूर्वा मुखीजा के खिलाफ की एफआईआर दर्ज हुई और मसलना सुप्रीम कोर्ट तक जा पंहुचा। सुप्रीम की सुनवाई के समय पहली टिप्पणी–"हमें तुम्हारे मुंह में दुर्गंध आ रही है"। अभियुक्त की तरफ से खड़े युवा वकील ने कहा–"मी लार्ड, मुझे भी घिन्न आ रही है"। अब आप समझ ही गए होंगे कि मसला कितना संगीन हो चला है। गालियों के व्यापारी करोड़ों रूपया कमा रहे हैं। लाखों-करोड़ों फैन फालोवर्स हैं। यह महामारी तेजी से फ़ैल रही है।

सोचिये ऐसे लोग समाज को क्या दे रहे हैं ये कॉमेडी के नाम पर। पर सवाल यह नही है कि ऐसे भद्दे मजाक क्यों हो रहे हैं इन पर लगाम क्यों नही लग रही। श्रीमान जब हमारी कार्यपालिकाओं और विधायिकाओं में जब हमारे प्रतिनिधि सरेआम न्यूड विडियो देखते हुए कैमरों में कैद हो रहे हैं तो आम जन की कौन कहे।

हमारी सबसे बड़ी चिन्ता ये है कि नाबालिग बच्चे इन्हें सबसे ज्यादा इन्हें देखते, सुनते और इनका अनुसरण करने की कोशिश करते हैं। इसी पैनल में एक अपूर्वा मुखीजा नाम की लड़की भी जज थी जो प्रतियोगी से पूछती है कि जिस माँ के गोपनीय अंग का नाम लेकर तुम इससे बाहर आये हो बताओ उसके अलावा कभी कोई दूसरी औरत यह अंग कब देखा है। अब बताइए कॉमेडी के नाम पर मातृत्व को लेकर इतना गंदा और भद्दा। मजाक और माता पिता के रिश्तों पर असहनीय बात कौन करता है। ये कॉमेडी का वो स्तर है, जिसने सभ्यता का सम्पूर्ण स्तर गिरा दिया है। ऐसे मानसिक विकृतियों के विषाणु अब हमारी मुट्ठी में कैद हो गए हैं जिन्हें जब चाहो देखो और सुनो। यह एक ऐसा कुचक्र जिसमें ये लोग हमारी आने वाली पीढ़ी को संस्कार-विहीन करने का संकल्प ले चुके हैं। सरकार और पैरेंट्स के लिए यह एक एक अलार्म है, जो बहरों को भी सुनई दे रहा है। सम्भल जाइए, वरना हम अपने बच्चों का और अपने महान राष्ट्र का सर्वनाश अपनी आंखों से देखेंगे।

सोशल मीडिया पर इस एक मामले ने देखते ही देखते तूफान ला दिया। प्रकरण तब और पेचीदा हो जाता है जब आरोपी यूट्ययूबर को स्वयं प्रधानमंत्री मोदी अपने कर-कमलों से सम्मानित भी कर चुके हों।

बेबुनियाद हंसी के बाज़ार में एक नई चीज़ आई है डार्क ह्यूमर। उससे पहले कपिल शर्मा जैसे कॉमेडियन रोस्ट कॉमेडी लेकर आए थे। उससे भी पहले जसपाल भट्टी रोस्ट कॉमेडी का अनोखा गुदगुदाने वाला संस्करण लेकर आए और अमर हो गए।

अब रील्स का ज़माना है, सो डार्क और रोस्ट को मिलाकर एक नई कॉमेडी बनी है, जिसमें अथाह गाली-गलौच और सामान्य वर्जित विषयों पर फिसलती जुबां से हंसी परोसी जा रही है। रणवीर अलाहाबादिया, समय रैना जैसे अनेक लड़के लड़कियां डार्क ह्यूमर के नए स्तंभ बन रहे हैं। समाज की हर वर्जना, हर हद को तोड़ रहे हैं। इनकी बातों से बने गुब्बारे को इस हद तक दबाया जाता है कि थोड़ी ही देर के भीतर दबी हुई हंसी का गुब्बारे फूट पड़तें। जिसे परोसने वाला फूलकर कुप्पा हो जाता है। बदले में ढेर सारा पैसा साथ में सस्ती लोकप्रियता, एक-दो एफआईआर और नैतिकता सिखाने वाले ठेकेदारों की गालियां मुफ्त में। यह रिएक्शन घर-घर तक पहुंच रहा है। छोटे बच्चे भी इसे बेझिझक गालियां दोहरा रहे हैं। इससे समाज की कैसे ऐसी तैसी हो रही है इस पर मैं बात नहीं करूंगा। लेकिन भाषा और कंटेंट के तौर पर हम कितने बेहाल हो गए हैं यह तो साफ समझ आ रहा है। लोगों को सिर्फ अपनी भद्दी बातें कहनी है किराए के ठहाकेदारों के सामने।

जसपाल भट्टी कलजयी हैं। उनके पास अच्छी स्क्रिप्ट, बेजोड़ अभिनय और मारक संदेश था। तकरीबन एक कार्टूनिस्ट की पूरी सोच के साथ। आज यह सोच गायब है, क्योंकि हमने हंसी के नए स्त्रोत गंदगी में खोजने शुरू कर दिये हैं। हम आसानी से सस्ता कंटेंट बनाना चाहते हैं। ये क्षिणक मामला है, जिसके ज़ख्म बहुत गहरे हो चले हैं।

इस चलन की तबाही भयावह होगी, क्योंकि धर्म आधारित हमारे समाज में नैतिकता और आजादी के बीच हमेशा जंग हुई है। लेकिन इन हरकतों से अभिव्यक्ति की आजादी ही नही धर्म भी खतरे में पड़ गया है। जिस सनातनी समाज के पैंसठ करोड़ लोगों ने आस्था के नाम पर कुम्भ में गोते लगा कर नया विश्व कीर्तिमान बनाया है क्या विरोधाभास के नाम पर वे ही लोग इस गालियों के गंदे सागर में डूब कर अपनी बर्बादी पसंद करेगा।

–राजेन्द्र मोहन शर्मा,
अतिथि संपादक
साहित्यकार, शिक्षाविद एवं चिन्तक

होली मिलन समारोह आज

हिण्डौन सिटी। राजपूत समाज का होली मिलन व सम्मान समारोह आज शहर के मेवा रोड स्थित एक निजी मैरिज होम में आयोजित किया जाएगा।

राजपूत समाज के शिशपाल सिंह जादौन, सत्यस्वरूप सिंह जादौन, नत्थू सिंह राजावत, अजय सिंह सोलंकी, कै. नरोत्तम सिंह, रामराज सिंह, उम्मेद सिंह, गणेश सिंह रामचन्द्रसिंह, नरेन्द्र सिंह जादौन एडवोकेट, पुष्पेन्द्र सिंह राजावत, सुनील सिंह जादौन नरेंद्र सिंह जादौन एडवोकेट ने जानकारी देते हुए बताया कि समाज का होली मिलन एवं सम्मान समारोह रविवार सांय 4 बजे वृंदावन रिसोर्ट महवा रोड में आयोजित किया जावेगा। इस दौरान गोवर्धन सिंह जादौन को भारतीय जनता पार्टी जिला करौली का जिलाध्यक्ष निर्वाचित किये जाने, अजयसिंह जादौन को जिलाध्यक्ष क्रिकेट संघ करौली निर्वाचित होने पर, सीमा जादौन को जिला शिक्षा अधिकारी पद पर पदोन्नत किये जाने पर एवं बाईसा धानवी सिंह पिचानोंत के राज्य स्तर पर घुडसवारी प्रतियोगिता में 2 सिल्वर व 2 कांस्य पदक प्राप्त करने पर सम्मान भी किया जावेगा।

श्रीश्यामबाबा भजन समिति

सीकर,। श्रीश्यामबाबा भजन समिति की ओर से शुक्रवार को श्यामप्रभु की विशाल निशान यात्रा नगर के मुख्य मार्गो से निकाली गई। श्यामभक्त रामगोपाल गोपी के सानिध्य में शाम सवा 6 बजे निशान खाटूश्यामजी पहूंच कर बाबा के चरणों में अर्पित किये गए। समिति के अध्यक्ष राजकुमार त्रिपाठी ने बताया कि श्यामभक्त भजन गायक रामगोपाल गोपी, सुनील नैनसुखा, वीरेन्द्र माथुर, दीपक पटेल, राजेश शर्मा, अदि मौजुद थे।

'सभी का सम्मान करना चाहिए'

भरतपुर (निस)। कृषि महाविद्यालय भुसावर पर शनिवार को शून्य भेदभाव दिवस के उपलक्ष्य में बिचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के डीन डॉ उदय भान सिंह ने कहा कि धर्म, जाति, लिंग, क्षेत्र, बीमारी, शारीरिक विकलांगता, पहनावा, रंग आदि के आधार पर मानव से मानव में भेदभाव करना गलत है। कुछ लोग या जातियॉ अपना प्रभुत्व कायम करने अथवा राजनैतिक लाभ लेने के लिए भेदभाव पैदा करते हैं। हमें हर मानव चाहे वह मजदूर, महिला या फिर विश्व में कही भी निवास करता हो, सभी का सम्मान करना चाहिए। डॉ विकास कुमार आर्य ने कहा कि कई व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह अन्य व्यक्ति को अशुभ मानते है, कई औरतो को डायन बताकर उसे प्रताड़ित किया जाता है। ऐसा करना कानूनी अपराध व वैज्ञानिक सोच के विरूद्ध है। डॉ शंकर लाल यादव ने कहा कि सामाजिक या कानूनी रूप से स्वीकृत कोई भी कार्य छोटा या बडा नही होता, हमें सभी तरह के कार्य करने वाले व्यक्तियों का समान रूप से सम्मान करना चाहिए।

राजस्थान हाईकोर्ट का आदेश कार्मिक को एपीओ करने का कारण भी लिखित में बताना होगा

जोधपुर, (कासं)। राजस्थान हाईकोर्ट ने अपने आदेश में कहा कि एपीओ आदेश केवल राजस्थान सेवा नियमो में उल्लेखित आकस्मिक कारणों या समान कारणों में ही पारित किया जा सकेगा। कार्मिक को एपीओ करने का कारण भी लिखित में बताना जरूरी होगा, अन्यथा आदेश विधि विरुद्ध होगा। मामले में अधिवक्ता यशपाल ख़िलेरी ने याचिकाकर्ता डॉ. दिलीप सिंह चौधरी, डॉ. मांगीलाल सोनी, लक्ष्मीनारायन कुम्हार सहित अन्य की ओर से पैरवी की। राजस्थान हाइकोर्ट के न्यायाधीश अरुण मोंगा की एकलपीठ से राहत मिली।

भोपालगढ़, ज़िला जोधपुर के ब्लॉक मुख्य चिकित्सा अधिकारी याचिकाकर्ता डॉ दिलीप सिंह चौधरी की ओर से अधिवक्ता यशपाल ख़िलेरी ने रिट याचिका दायर कर बताया कि याचिकाकर्ता वर्ष 2015 से चिकित्सा अधिकारी पद पर नियुक्त होकर छह साल की आवश्यक संतोषजनक सेवा पूर्ण करने के बाद उसे वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी पद पर नियुक्त करते हुए बीसीएमओ, भोपालगढ़ के पद पर नियमानुसार नियुक्त किया गया। लेकिन तीन साल की सेवावधि वाले जूनियर अयोग्य चिकित्सक को उक्त वरिष्ठ पद पर नियुक्त करने की एक मात्र मंशा से याचिकाकर्ता को आदेश दिनाँक 19 फ़रवरी 2024 से एपीओ कर दिया गया, जिसे रिट याचिका दायर कर चुनोती दी गई।

सभी समान एपीओ आदेशो को चुनोती वाली रिट याचिकाओं की प्रारंभिक सुनवाई पर हाइकोर्ट की एकलपीठ ने एपीओ आदेश पर अलग अलग स्थगन आदेश जारी करते हुए राज्य सरकार को जवाब तलब किया था। राज्य सरकार की ओर से जवाब पेश कर जाहिर किया गया कि एपीओ आदेश प्रशासनिक आवश्यकता व जनहित को देखते हुए किया गया, जो राजस्थान सेवा नियम के नियम 25 क के अनुसार सही जारी किया गया है।

सभी 56 रिट याचिकाओ की अंतिम सुनवाई करने के बाद और पूर्व न्यायिक निर्णयों डॉ सुकुमार कश्यप बनाम राजस्थान राज्य और डॉ महेश कुमार पंवार बनाम राजस्थान सरकार निर्णयों से सहमत होते हुए और राजस्थान सेवा नियम 1951 के प्रावधानों का विस्तृत विवेचन करते हुए राजस्थान हाइकोर्ट एकलपीठ ने समस्त एपीओ आदेशों को निरस्त करते हुए भविष्य में एपीओ आदेश जारी करने के लिए विस्तृत दिशानिर्देश जारी किए, जिसमे एपीओ आदेश का उद्देश्य व औचित्य, एपीओ आदेश जारी करने की शर्तें, सीमाएं व प्रतिबन्ध, तथा प्रशासनिक जवाबदेही के सम्बन्ध आवश्यक निर्देश प्रतिपादित किये गए। साथ ही राज्य के मुख्य सचिव को इस सम्बन्ध में प्रशासनिक निर्देश जारी करने को भी आदेशित किया ताकि भविष्य में एपीओ आदेश जारी करते समय इन दिशानिर्देशों की अक्षरशः पालना हो सकें। एकलपीठ ने एपीओ मामलों में यह महत्वपूर्ण व्यवस्था दी कि एपीओ आदेश को स्थानान्तरण आदेश के विकल्प के रूप में जारी नही किया जा सकता है और न ही किसी कार्मिक को दंड देने अथवा अनुशासनात्मक कार्यवाही के विकल्प के रूप में या उससे बचने के पर्याय के रूप में पारित किया जा सकता है। साथ ही एपीओ आदेश राजस्थान सेवा नियम में उल्लेखित सात परिस्थितियों अथवा उसके ही समान परिस्थितियों में ही जारी किया जा सकता है लेकिन उन परिस्थितियों को संबंधित कार्मिक को लिखित में बताना आवश्यक होगा। एपीओ आदेश 30 दिन से अधिक जारी नही रखा जा सकता है बशर्ते वित्त विभाग द्वारा वैद्य औचित्य के साथ इसे अनुमोदित नही किया जाए।

राशिफल रविवार 2 मार्च, 2025

पंडित अनिल शर्मा

फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र प्रातः 8:59 तक, शुभ योग दिन 12:39 तक, तैतिल करण दिन 10:36 तक, चन्द्रमा सोमवार प्रातः 6:39 से मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-मीन, मंगल-मिथुन, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज राजयोग सूर्योदय से प्रातः 8:59 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से 8:59 तक बना रहेगा। रवियोग सूर्योदय से आरम्भ होगा। आज शुक्र वक्री प्रातः 6:08 पर होगा। आज पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:20 से 9:46 तक, लाभ-अमृत 9:46 से 12:39 तक, शुभ 2:05 से 3:32 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:54, सूर्यास्त 6:24

मेष
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
आज मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। आज घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

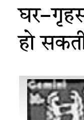

मिथुन
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आवश्यक कार्य के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। परिवार में धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

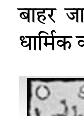

कर्क
अपने अति और महत्वपूर्ण आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

सिंह
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

कन्या
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में परेशानी हो सकती है।

तुला
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

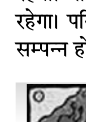

वृश्चिक
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

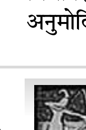

धनु
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।

मकर
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

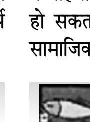

मीन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।